आधुनिकीकरण : परिवर्तन की एजंसियाँ, मास मीडिया, शिक्षा और संचार

डॉ. परेश आर.पटेल
अध्यापक,
आर्टस कोलेज, अंद्रोखा

१. प्रस्तावना

यही सही है कि हमारे देश में आधुनिकीकरण का प्रारम्भ ब्रिटिशराज के समय से है। जब हमें लगा कि ब्रिटिश सम्पर्क के कारण इस देश में परिवर्तन आ रहे है तब हमने व्यवस्थित रुप से हमारी परम्पराओं का अध्ययन किया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही डी.पी.मुखर्जी ने कहा कि उपनिवेशवादी संस्कृति के संदर्भ में हमें अपनी परम्पराओं को अपने ऐतिहासिक संदर्भ में समझना होगा। यह देखना होगा कि हमारी परम्पराएं किस भांति विदेशी संस्कृति को अपनाती है। योगेन्द्रसिंह कहते हैं कि पिछले पचास वर्षों में भारतीय समाजशास्त्रियों ने इस बात का विश्लेषण किया कि बाह्य स्त्रोतों से निर्मित पाश्चात्य संस्कृति का स्वरुप हमारी परम्पराओ को क्या रुप देता है। इन दशकों में भारतीय संस्कृति का आनुभविक-एथनोग्राफिक (Empirical-ethnographic) अध्ययन समाजशास्त्रियों ने किया। इन अध्ययनों की एक धारा भारतीय समाजशास्त्रियों की है जिन्होंने विभिन्न परम्पराओं का अध्ययन करके उनके बीच में जो संयोजन (Linkage) है उसकी पहचान की जाये। दूसरी धारा अमेरीकी सामाजिक मानवशास्त्रियों की है जिन्होंने भारतीय संदर्भ में यहां के समुदायों का अध्ययन किय। इन्होंने बताया कि भारतीय सामाजिक परिवर्तन लोक समुदाय से चलकर कृषक समुदाय तक आता है और फिर आधुनिक समाज पर रुकता है।

हाल में सामजिक अध्ययन की एक तीसरी धारा भी सामने आयी है। यह धारा पीपल ओफ ईनडया (POI) के प्रकाशन से आइ है। के.एस.सिंह के नेतृत्व में भारत के 4000 से उपर समुदायों का अध्ययन हुआ है। इसके निष्कर्ष दूरगामी है। उदाहरण के लिये के.एस.सिंह बताते है कि भारत में अब क्षेत्रीय स्वायत्तता उभर कर आ रही है। प्रत्येक अंचल अपनी मांगो को लेकर दावे कर रहा है। अब ये अंचल अधिक सुद्रढ हो रहे हैं। इस अनुसंधान की इन तीनों धारों को ध्यान में रखकर हम भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के कारण आनेवाले परिवर्तन का विस्तार से विश्लेषण करेंगे।

२. अर्वाचीन परिवर्तन (Contemporary Change)

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय समाज में बहुत बडे परिवर्तन आये है और सन् 1991 के बाद वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण जो परिवर्तन आया है उसके बहुत बडें परिणाम भारतीय समाज पर पडे हैं । ढांचागत परिवर्तन को सरकार की अर्थनीति बनाने के कारण बाजार तथा विदेशी निवेश इस देश की जमीनी हकीकत (Grassroot Reality) बने गये हैं । इस नइ आर्थिक नीति के कारण महंगाइ तेजी से बढ गय है, निर्यात वृद्धि की दर कम हुइ है और आयात लगातार बढ रहा है । आज गरीबी रेखा के नीचे, आर्थिक सुधारों के आरम्भ होने के समय की अपेक्षा कइ अधिक लोग रह रहे हैं । मतलब हुआ देश में गरीबी बढी है । वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीतियों ने सामाजिक विकास के उद्देश्यों जैसे गरीबी हटाने, रोजगार में वृद्धि करने तथा सामाजिक सेवाऐं बढाने पर उल्टा प्रभाव पडा है । एक प्रकार से देश में अभिजात्यकरण हो रहा है । पूंजीवाद की जडें मजबूत हो रही हैं । आधुनिकीकरण द्वारा पैदा किये गये इस सामाजिक परिवर्तन में मास मीडिया की भूमिका बहुत शक्तिशाली है, जिसे हम आधुनिक समाज कहते हैं । इका बहुत बडा लक्षण मास मीडिया और बाजार है । यह मीडिया के कारण ही है कि दूर-दराज का गांव सीधा न्युयोर्क और पेरिस से जुडा गया है । सामान्यतया मीडिया को प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अर्थ में लिया जाता है । यहां प्रिन्ट मीडिया में समाचार पत्र, पुस्तकें, पत्र-व्यवहार आदि सम्मिलित हैं । वहां इलेक्ट्रोनिक मीडिया में टेलीविजन, कम्प्युटर, सेल्युलर फोन, रेडियो, फैक्स आदी सम्मिलित हैं । मीडिया के इस माध्यमों ने दिरियों को समेट लिया हैं । आधुनिकीकरण के जिन परिवर्तनों की हम चर्चा करते हैं, उनमें शिक्षा और संचार भी महत्वपूर्ण साधन है । हमारे देश में इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी ने जो क्रान्ति उपस्थित की है, वह अनन्य है । इधर वाणिज्य में प्रबन्ध पाठ्यक्रम तथा विज्ञान में तकनीकी के पाठ्यक्रम इतने विकसित हुए हैं कि संसार भर में भारतीय विशेषज्ञों की धाक बैठ गयी है ।

योगेन्द्र सिंह कहते हैं कि आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के अतिरिक्त आधुनिकीकरण ने सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत किये हैं । सम्पूर्ण देश में लोगों की जीवनपद्धति (Life Style) और अवकाश (Leisure) की गतिविधियां बदल गयी है । अब उपयोग की पद्धतियों कुछ दूसरी ही हो गयी है । किसी भी शहर के नुक्कड पर फास्ट फूड की दुकानें मिल जाती है, पोशाक का तौर-तरीका बदल गया है, सिन्थेटिक वस्तुएं अधिक काम में आने लगी हैं, आवागमन के साधन एक से बढकर एक नये हैं । अब मांस खाना, मुर्गाखाना और शराब पीना उपभोग के शौकिया साधन हो गये है । मजेदार बात है क सामान्य लोग भी फल-फूल खाने लगे हैं, सब्जियां खाने का रिवाज बढ गया है और लोग दूध तथा दूध की वस्तुओं को अधिक काम में लेने लगे हैं । हरित क्रान्ति जो 1970 के दशक में हुइ थी अब उसकी पूरक श्वेत क्रान्ति (White Revolution) आ गयी है । ये सब परिवर्तन भारतीय समाज में बहुत बडे परिवर्तन हैं । इस हिन्दू प्रवासी समाज में, के.एस.सिंह बताते है, 90 प्रतिशत लोग मांसाहारी हैं और केवल 10 प्रतिशत शाकाहारी । नेशनल सेम्पल सर्वे भी ऐसे ही परिवर्तन को प्रमाणित करता है । सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन की दिशा एकदम क्रान्तिकारी है । अब जातियों, उपजातियों, अल्पसंख्यकों या आंचलिक समूहों में क्षेत्रीयता की

भावना अधिक आने लगी है। इस बात के भी प्रमाण हैं कि प्रजातान्त्रिक और धर्म निरपेक्ष शक्तियों ताकतवर होने लगी है। हमने पंचायती राज में पिछडे वर्गो को आरक्षण देकर प्रोत्साहित किया है। स्त्रियों का सबलीकरण किया है। एक क्षेत्र से लोग दूसरे क्षेत्र में यानी राजस्थान के मारवाडी दक्षिण भारत में और केरल के इसाइ सारे उत्तर-भारत में बिना हीचकिचाहट के आ-जा रहे हैं। यह एक शकीकरण की नयी शक्ति है। पीपल ओफ इनिडया (POI) प्रोजेक्ट बताता है कि देश में कुल 91 सांस्कृतिक क्षेत्र हैं और लगभग प्रत्येक राज्य में एकाधिक क्षेत्र हैं। केवल गोआ ही ऐसा है जिसमें कोइ उपक्षेत्र नहीं है। भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरुप जो विभिन्न और एकता आयी है वह स्पष्ट रुप से बताती है कि इस समाज में परम्पराओं का केन्द्रीय स्थान है। ये परम्पराएं ही हैं जो इतने परिवर्तनों के बाद भारतीय समाज की पहचान को बनाये हुए हैं। अब हम इस समाज की एथनिसिटी और सांस्कृतिक पहचान को आधुनिकीकरण द्वारा लाये गये परिवर्तन के संदर्भ में देखेगें।

३. एथनिसिटी, सांस्कृतिक पहचान और परिवर्तन (Ethnicity, Cultural Identity and Change)

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के परीणामस्वरुप इस दे में व्यापार के क्षेत्र में बहुत बडे परिवर्तन आये हैं। हुआ यह है कि बहुत बडे परिवर्तन के होते हुए भी समाज के विभिन्न अंगो में संयोजन बना हुआ है। जाति, जनजाति, धार्मिक समूहों, सांस्कृतिक अंचल आदि पृथक् होते हुए भी आपस में जुडे हुए हैं। यहां तक सब ठीक है। देश में एकीकरण आया है। लेकिन राजनीतिक कारकों ने एक नइ मांग भी उत्पन्न कर दी है। अब लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान (Cultural Autonomy) की बात करने लगे हैं। उदाहरण के लिये अब देश मे आदिवासी यह कहने लगे हैं कि हमें पुनः अपने धर्म की और लौटना चाहिये। एक तरफ उन्हें हिन्दू बनाया जा रहा है, और दूसरी और ईसाई। धबराये हुए वे कहते है : अपने धर्म की ओर लौटो। के.एस.सिंह कहते हैं कि अब दलित लोग अपनी मांग को बुलन्द कर रहे हैं कि हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखेगें। दिलितों का इस तरह की मांग करना बताता है कि वे ब्राह्मणवाद से अपने आपको पृथक् करना चाहते हैं। उच्च हिन्दू जातियों से भी उनका मोह भंग हो गया है। के.एस.सिंह की इस बात का समर्थन गेल ओम्वेट (Gail Omvedt) और एम.एस.गोरे भी कहते हैं। इस प्रक्रिया को मीडिया, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक भागीदारी ने और अधिक गति दी है। धर्म का जो राजनीतिकरण हुआ है इसने भी समस्याओं को बढा दिया है।

४. आधुनिकीकरण और परिवर्तन की समस्याएँ (Modernization and Problems of Change)

आधुनिकीकरण ने भारतीय समाज में कइ समस्याएं पैदा कर दी हैं। हमारे यहां औद्योगीकरण से पहेले व्यवस्था में जो साम्यानुकूलन था उसे आधुनिकीकरण ने बिगाड दिया है। उत्पादन की विधियां बदल गयी हैं, और इसके परिणामस्वरुप सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं में बदलाव आ गया है। देखा जाये तो पिछले 50-70 वर्षों में इस देश में दो क्रान्तियां आयी हैं। पहली क्रान्ति तो औद्योगिक क्रान्ति है और दूसरी प्रजातान्त्रिक। इन दोनों

क्रान्तियों ने परम्परागत साम्यानुकूलन (Traditional Equilibrium) को उलट-पुलट दिया है। औद्योगिक क्रान्ति राष्ट्र निर्माण की बात करती है। इसका परिणाम यह होता है कि हम एक विश्व समुदाय या वैश्वीय सभ्यता के साथ जुड जाते हैं। जब ऐसा होने लगता है तब सबसे बडा खतरा स्थानीय और आंचलिक संस्कृतियों की पहचान का पैदा हो जाता है। जब हम राष्ट्र निर्माण के काम में जुट जाते हैं तो इससे आर्थिक और औद्योगिक विकास होता है। यह विकास गैर-बरबादी को बढावा देता है। उदाहरण के लये हरित और श्वेत क्रान्ति ने गांव में गैर-बरबादी को बढा दिया है। इस तरफ औद्योगिक विकास ने पर्यावरण को नष्ट कर दिया है। गंदी बस्तियां आ गयीं हैं।

रुचिकर बात यह है कि इन प्रक्रियाओं के परीणामस्वरुप देश के विभिन्न अंचलों में सांस्कृतिक पहचान का मुद्दा उभरकर सामने आ गया। अब आदिवासी जातियां और धार्मिक समूह अपनी पहचान पर जोर देने लगे हैं। आये दिन नये देवी-देवताओं का आविर्भाव हो रहा है। नित नइ शोभा यात्राऐं निकल रही हैं। कहीं भी एसा नहीं लग रहा है कि उद्योग और उत्तर-उद्योग के विकास के स्तर पर पहुच कर हम मानवीय समस्याओं के साथ रु-ब-रु हो रहे हों। परणाम यह हो रहा है कि हमार संयुक्त परवार की परम्परा टूट रही है। गांवों की एकता समाप्त हो रही है और शहरों का पर्यावरण जान लेवा हो गया है। आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया में हमारे परम्परागत मूल्य खतरे में आ गये हैं। यदि यही चलता रहत तब हम विध्वंस के कगार पर खडे हो जायेंगे। योगेन्द्र सिंह कहते हैं : आधुनिकीकरण का हमारे मूल्यों, सांस्कृतिक व्यवहारों परिस्थिति की और मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता पर ऐसा प्रभाव पडा है के इसका परिणाम हमारे लिये विध्वंसकारी होगा। हमारा सांस्कृतिक संघर्ष बहुत गहरा है। आधुनिकीकरण ने हमारी परम्पराओं और नये मूल्यों में एक अद्‌भुत भेंट करवा दी है। इसके कारण हमारे परम्परागत मूल्यलं का क्षय हुआ है, जन संस्कृति की संरचना कमजोर हो गयी है और इससे हमारे मुख्यधारा की सांस्कृतिक परम्परा ढीली पड गयी है और इस सबका सम्बन्ध एक नये बाजार की संस्कृति के साथ जुड गया है। हमारा विचार है कि यदी आधुनिकीकरण के इस दौर में हमारे परम्परागत परिवार व्यवस्था टूट गयी और गांव तथा मोहल्ले के सम्बन्ध कमजोर हो गये तब अन्य विकसित समाजों की तरह हमारे समाज की सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था में संकट आ जायेगा।

संदर्भसूचि

1. Desai, A.R. (1966). Social Background of India Nationalism, Popular Prakashan, Bombay.
2. Dube, S.C. (1993). Understanding Change, Vikas Publishing House, New Delhi.
3. Gupta, (2000). Dipankar Mistaken Modernity, Harper Collins, New Delhi.
4. Singh, K.S. (1992). People of India: An introduction, Anthropological Survey of India, Calcutta.
5. Singh, Yogendra (1994). Modernization of Indian Tradition, Rawat, Jaipur, (reprinted)
6. Smith, D.E. (1963). India as a Secular State, Princeton University Press, New Jersey.